# Baglamukhi Mantra in Hindi and Sanskrit



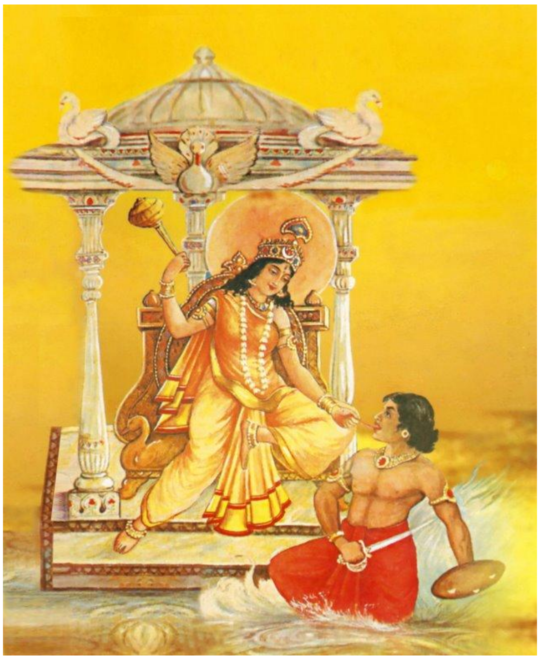

## Shri Yogeshwaranand Ji

**+919917325788, +919675778193**

**shaktisadhna@yahoo.com**

**www.yogeshwaranand.org**

**www.anusthanokarehasya.com**

यंहा प्रस्तुत मंत्र गुरूदेव श्री योगेश्वरानन्द जी द्वारा लिखित पुस्तक श्री बगलामुखी साधना रहस्य (ब्रह्मास्त्र साधना) से लिया गया है । इस पुस्तक का प्रथम संस्करण 1000 प्रतियो के साथ जल्द ही आ रहा है।

## अध्याय 23

# ॥ भगवती बगलामुखी मंत्र विधान ॥

भगवती बगला साधक के शत्रुओं का नाश तो करती ही हैं, साथ ही साथ ऐश्वर्य भी प्रदान करने वाली हैं। अलग-अलग कामनाओं के लिए इनके अलग-अलग मंत्र हैं, हवन तथा अभिषेक द्रव्य हैं। साधक जिस प्रकार की कामना करता है, उसी प्रकार का फल ये उसे प्रदान करती हैं।

### ॥ आम्नाय भेद ॥

पूर्णाभिषिक्त साधक को षडाम्नाय मंत्रों की साधना कर पूर्णता प्राप्त करनी चाहिए। भगवती बगला की साधना दोनों आचारों में होती है, लेकिन वामाचार मार्ग से ये शीघ्र सिद्धिप्रदा हैं। आम्नाय भेद से उनके मंत्रों का वर्गीकरण इस प्रकार है-

**पूर्वाम्नाय-** ब्रह्मास्त्र गायत्री, हृदय, नवाक्षर मंत्र, एकादशाक्षर मंत्र।

**दक्षिणाम्नाय-** षट्त्रिंशदक्षरी, एकाक्षरी, चतुराक्षरी तथा अष्टाक्षरी मंत्र।

**पश्चिमाम्नाय-** त्र्यक्षर,शताक्षर,मालामंत्र, शाबर मंत्र, परप्रयोगभक्षिणी विद्या।

**उत्तराम्नाय-** पञ्चास्त्र मंत्र, बगलास्त्रम् कवच विद्या।

**उर्ध्वाम्नाय-** 1- ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं स क ल ह्लीं ह स क ह ल ह्लीं क ए ई ल ह्लीं। (इति पराषोडशी)

2- ऐं ह्लीं श्रीं सौं क्लीं ऐं ह्लीं श्रीं स क ल ह्लीं ह स क ह ल ह ल ह्लीं क ए ई ल ह्लीं ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्लीं। (इति पराषोडशीरूपम्) <u>(कामराज कूट)</u>

### ॥ एकाक्षरी मंत्र-विधान ॥

**मंत्र- ह्लीं अथवा ह्लीं। ( ह्लीं )**

भगवती बगला का सही बीज मंत्र है। यदि आप 'ह्लीं' का जप करना चाहें तो कर सकते हैं। यदि आप 'ह्लीं' का

जप करना चाहे तो वह भी कर सकते हैं। लेकिन कहा गया है कि 'ह्लीं' अभिशप्त मंत्र है और कीलित भी, अतः इसका जप नहीं करना चाहिये। 'ह्लीं' में 'रं' का प्रयोग इसके शाप को दूर करने हेतु जोड़ा गया है। अग्नि बीज 'र' का संयोजन करने से इस मंत्र की उग्रता और अधिक बढ़ जाती है। वैसे उचित यही है कि रेफ हीन बीज का जप न करके रेफयुक्त बीज का ही जप करना चाहिए। बीज मंत्र ही मंत्र का जीवन और साधक के अभीष्ट की पूर्त्ति करने वाला होता है। कोई-कोई मंत्र ऐसा भी होता है, जिसमें बीज मंत्र नहीं होता। परंतु ऐसा मंत्र निर्वीर्य अर्थात् अशक्त होता है-**'निर्बीजमेव निर्वीर्य शिवस्य वचनं यथा।'** (सांख्यायन तंत्र)

भगवती का बीज मंत्र 'ह्लीं' दक्षिणाम्नाय का है, जिसे स्थिर माया भी कहा जाता है।

**विनियोग- एकाक्षरी बगला मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छंदः बगलामुखी देवता, लं बीजं, ह्लीं शक्तिः, ईं कीलकम्, मम सर्वार्थ सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।** ('बगलामुखी-रहस्य' में 'हूं' शक्तिः बताया गया है।)

**षडङ्गन्यास-** ॐ ह्लां हृदयाय नमः। ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्लूं शिखायै वषट्। ॐ ह्लैं कवचाय हुं। ॐ ह्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्लः अस्त्राय फट्।

ऋष्यादि न्यास इस प्रकार करें-

**ऋष्यादि न्यास-** श्री ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। श्री बगलामुखी देवतायै नमः हृदि। लं बीजाय नमः गुह्ये। ह्लीं शक्तये (हूं शक्तये) नमः पादयोः। ईं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

**करन्यास-** ॐ ह्लां अंगुष्ठाभ्या नमः। ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ ह्लूं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ह्लैं अनामिकाभ्यां हूं। ॐ ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ ह्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

## ॥ ध्यान ॥

**वादी मूकति रङ्कति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति**
**क्रोधी शान्तति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति।**
**गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति, त्वद्यन्त्रणा यन्त्रितः**
**श्रीनित्ये बगलामुखि! प्रतिदिनं कल्याणि! तुभ्यं नमः॥**

अर्थात्- हे मां बगले! आपके नियंत्रण से नियन्त्रित होने पर विवाद करने वाला मनुष्य मूक हो जाता है, राजा रंक हो जाता है, अत्यंत प्रज्वलित अग्नि भी शीतल हो जाती है, क्रोधी शांत हो जाता है, दुर्जन सज्जन बन जाता है। तीव्रगामी लंगड़ा हो जाता है तथा घमण्डी का गर्व चूर-चूर हो जाता है, सर्वज्ञ भी जड़ हो जाता है। अतः हे भगवती बगला! हे कल्याणी! हे नित्ये! आपको नित्य प्रणाम है।

जप संख्या- एक लाख, पीतपुष्पों होम (दशांश), तद्दशांश गुड़ोदक से तर्पण करें। (पीले वस्त्र, पीता आसन, हरिद्रा-माला, पीता नैवद्य)

**॥ बीज-मंत्र के जप से लाभ ॥**

1 शत्रुओं का स्तंभन एवं नाश।

2 स्त्री-वशीकरण एवं शत्रु वशीकरण।

3 विपत्तियों का नाश।

4 वांछित पदार्थों का प्राप्ति।

5 धनागम में वृद्धि

जैसा कि ''बगला शतक'' में कहा भी गया है-

''सान्ते रान्तेन वामाक्षणि विधुकलया राजिते त्वं महेशि!

बीजान्त:स्था लतेव प्रविलसति सदा सा हि माया स्थिरेयम्।'' (उद्धार)

जप्ता ध्याताऽपि भक्तैरहनि निशि हरिद्राक्तवस्त्रावृतेन

शत्रून् स्तम्भनाति कान्तां वशयति विपदो हन्ति वित्तं ददाति॥ (निर्देश व फल)

**स्पष्टीकरण-**

1 '**सान्ते**'- जहां 'स' का अंत होता है, उससे आगे। (वर्णमाला में 'से' के बाद 'ह' वर्ण आता है, अर्थात् 'ह')

2- '**रान्तेन**'- र के अंत में अर्थात् 'र' के बाद। (वर्ण माला में 'र' के बाद 'ल' आता है, अत: 'ल')

3- **वामाक्षणि**- बांयी आंख। भगवती के बांये नेत्र को 'ई' कहा गया है।

4- **विधुकलया**- चन्द्रकला के द्वारा अर्थात्, अर्ध चन्द्र या चन्द्र बिन्दू ( ँ )

5- **राजिते**- शोभायमान (चंद्रबिन्दु से)

अर्थात् - 'ह्लीं'

तर्पण के उपरांत (गुड़ को जल में मिलाकर-गुड़ोदक से) हवन, अभिषेक व ब्रह्माण-भोज का विधान करने पर निश्चय ही मंत्र सिद्ध हो जाता है। वाम-मार्ग क्रम में 'पुष्पिणी' राज:स्वला शक्ति का अर्चन करने का विधान भी है, जो 'कुलाचार' मार्ग से संपन्न होता है। इस संबंध में (सांख्यायन तंत्र-पञ्चम पटल) में स्पष्ट किया गया है कि-

एवं ध्यात्वा जपेन् मन्त्रं तत्त्वलक्षं सुबुद्धिमान्।

गुडोदकेन सन्तर्प्य तद्दशांशेन पुत्रक॥

त्रिकोणकुण्डे जुहुयात् हस्तनिम्नोन्नते शुभे।

हयारिकुसुमेनैव सुरक्तेनाऽऽज्यसंयुतम्॥

ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चाततत्वसंख्याञ्च युग्मकम्।

मंत्रसिद्धिर्भवेत् पुत्र नान्यथा शिवभाषितम्॥

वामवार्गक्रमेणैव वामामभ्यर्च्य पुष्पिणीम्।

मंत्रसिद्धिकरं चैव सर्वदा रिपुनाशनम्॥

परमन्त्रप्रयोगेषु नानाचेटककृत्रिमै:।

सद्य:स्तम्भनविद्या च बगला नात्र संशय॥

वाममार्ग से 'पुष्पिणी' के अर्चन के संबंध में कुछ भी कहना व्यर्थ है। क्योंकि इस क्रिया के महत्व को वही साधक जान सकता है, जिसने इसे संपन्न किया हो। उसके पुण्य अनंत हो जाते हैं-''पूजयेद्विधिनाऽनेन तस्य पुण्यं न गण्यते।'' वह जिन मनोरथों की सिद्धि चाहता है, वे सभी पूर्ण हो जाते हैं।

चतु: पीठार्चनफलं स प्राप्नोति कुलेश्वरि!

यद् यत् स्वमनसोऽभीष्टं तत्तदाप्नोत्यसंशयम्॥

(कुलार्णव 10/47)

## ॥ त्र्यक्षर मंत्र-विधान ॥

**जपमंत्र- ''ॐ ह्लीं ॐ''**

**ध्यान-**

**कुटिलालक संयुक्तां मदाघूर्णित लोचनां**

**मदिरामोदवदनां प्रवाल सदृशाधराम्।**

**सुवर्णकलशप्रख्य[1] कठिनस्तन मण्डलाम्**

**आवर्त्त[2] विलसन्नाभिं सूक्ष्ममध्यमसंयुताम्॥**

**रम्भोरू पादपद्मां तां पीतवस्त्रसमावृताम्।**

**विनियोग-** ॐ अस्य श्रीबगला त्र्यक्षरी मंत्रस्य श्री ब्रह्माऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीबगलामुखी देवता ह्लीं बीजं आं शक्तिः, क्रों कीलकं, श्री-बगलामुखीदेवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

**ऋष्यादिन्यास-** श्री ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। श्री बगलामुखी देवतायै नमः हृदि। ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये। आं शक्तये नमः पादयोः। क्रों कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। श्री बगलामुखी देवताम्बाप्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ। (शेष न्यास एकाक्षरी मन्त्र के समान हैं)।

---

1-पाठान्तर भेद से सुवर्णशैल सुप्रख्य भी आता है।

2- दक्षिणावर्त भी आता है।

## ॥ चतुरक्षरी मंत्र-विधान ॥

**जपमंत्र- ''ॐ आं ह्लीं क्रों''**

इस मंत्र के ध्यान, विनियोग, न्यासादि त्र्यक्षरी मंत्र के समान है। केवल विनियोग में ''त्र्यक्षरी'' के स्थान पर ''चतुरक्षरी'' शब्द का प्रयोग होगा।

## ॥ पञ्चाक्षरी मंत्र-विधान ॥

**जपमंत्र- ''ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट्''**

पञ्चाक्षरी मंत्र में ''स्त्रीं'' शब्द आया है, जो भगवती तारा का बीज मंत्र है। इसलिए इस मंत्र के ध्यान, ऋष्यादि तारा महाविद्या के समान हैं।

### ॥ ध्यान ॥

प्रत्यालीढ़ परां घोरां मुण्डमालां विभूषिताम्।
खर्वां लम्बोदरीं भीमां पीताम्बरपरिच्छदाम्॥
नवयौवनसम्पन्नां पञ्चमुद्राविभूषिताम्।
चतुर्भुजां ललल्जिह्वां महाभीमां वरप्रदाम्॥
खड्गकर्त्री समायुक्ता सव्येतर भुजद्वयां।
कपालोत्पलसंयुक्तां सव्यपाणियुगान्विताम्॥

पिङ्गोग्रैकसुखासीनां मौलावक्षोभ्यभूषिताम्।
प्रज्वलत् पितृभूमध्यगतां दंष्ट्राकरालिनीम्॥
तां खेचरां स्मेरन्वदनां भस्मालङ्कारभूषिताम्।
विश्वव्यापकतोयान्ते पीतपद्मोपरिस्थिताम्॥

**विनियोग**-ॐ अस्य श्री बगलामुखीपञ्चाक्षरमंत्रस्य श्री अक्षोभ्य ऋषिः वृहती छन्दः, श्री बगलामुखी चिन्मयी देवता, हूं बीजं, फट् शक्तिः, ह्लीं स्त्रीं कीलकं श्री बगलामुखी चिन्मयी देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।
(विनियोग में कीलकं के बाद ''ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः'' भी आ सकता है। लेकिन केवल तब, जब काम्य-प्रयोग करना हो।)
**ऋष्यादिन्यास**- श्री अक्षोभ्य ऋषये नमः शिरिस। बृहतीछन्दसे नमः मुखे। श्री बगलामुखी-चिन्मयीदेवतायै नमः हृदि। ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये। फट् शक्तये नमः पादयोः। ह्लीं स्त्रीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। श्री बगलामुखी-चिन्मयी देवता प्रीत्यर्थे (ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे) जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।
शेष प्रक्रिया पूर्ववत् संपन्न होगी।

## ॥ सप्ताक्षर मंत्र-विधान॥

**जपमंत्र- ''ह्लीं बगलायै[1] स्वाहा।''**
इस मंत्र की विशेषता यह है कि साधक को देखने मात्र से ही उसका विरोधी व्यक्ति मन, प्राण, बुद्धि एवं इन्द्रियों सहित उसके समक्ष नतमस्तक हो जाता है, उसके पैरों में गिरने लगता है-''**स्वायत्त-प्राण-बुद्धि-इन्द्रियमय पतितं पादयोः पश्यति द्राक्।**''
इस मंत्र में 'ह्लीं' बीज का उल्लेख आया है, जिसे 'भुवनमाया' भी कहा जाता है। यहां भगवती बगला को चतुर्भुजी के रूप में ध्यान किया जाना चाहिए। ह्लीं बीजयुक्त चतुर्भुज ध्यान में भगवती 'उत्तराम्नाय' या 'ऊर्ध्वाम्नाय' रीति से पूज्या होती है।

1.उद्धार-मायाद्या (ह्लीं) च द्विठान्ता(स्वाहा)भगवती बगलाख्या चतुर्थी निरूढा।

**॥ ध्यान॥**

**दुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशमनं दारिद्र्यविद्रावणं।**
**भूभृत्स्तम्भन कारणं मृगदृशां चेतः समाकर्षणम्॥**
**सौभाग्यैकनिकेतनं मम दृशों कारूण्यपूर्णेक्षणं।**
**विघ्नौघं बगले! हर प्रतिदिनं कल्याणि! तुभ्यं नमः॥**

इसके अतिरिक्त भगवती बगला का दूसरा ध्यान भी किया जा सकता है, यथा-

**चतुर्भुजां त्रिनयंना कमलासन-संस्थितां,**
**त्रिशूलं पान पात्रं गदां जिह्वा च विभ्रतीम्।**

बिम्बोष्ठी कम्बुकण्ठीं च सम पीपयोधरां,
पीताम्बरां मदाघूर्णां ध्यायेद ब्रह्मास्त्र देवताम्॥

**॥ अष्टाक्षर मंत्र-विधान॥**

**जपमंत्र- 1 ''ॐ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा।''** (सांख्यायन तंत्र)

**2 ''ॐ ह्लीं श्रीं आं क्रों बगला।''** (बगला कल्पतरू)

इस मंत्र का बीज ''ॐ'' तथा कीलक ''क्रों'' है। इस मंत्र का पूरा विधान एकाक्षरी मंत्र के समान ही है। विनियोग में 'एकाक्षरी मंत्रस्य' के स्थान पर ''अष्टाक्षरी मंत्रस्य'' हो जायेगा। इसका ध्यान निम्नवत् है-

**॥ ध्यान॥**

**युवतीं च मदोन्मत्तां पीताम्बर-धरां शिवाम्।**
**पीतभूषण-भूषाङ्गि समपीन-पयोधराम्॥**
**मदिरामोद-वदनां प्रवालसदृशा-धराम्।**
**पानं पात्रं च शुद्धिं च बिभ्रतीं बगलां स्मरेत्॥**

## ॥ एकोनविंशाक्षर मंत्र॥

**( भक्तमंदार विद्या )**

भगवती बगला के इस मंत्र को '**वांछाकल्पलता**' माना जाता है। इसका साधन करने से साधक समस्त ऐश्वर्यो एवं सम्पत्तियों की प्राप्ति करने में सक्षम हो जाता है। वह श्री संपन्न हो जाता है।

**उद्धार-** ''श्री माया-योनि-पूर्वा भगवती बगले! में श्रियं देहि-देहि स्वाहेत्थं पञ्चमोऽयं प्रणवसहकृतो भक्तमन्दार-मंत्रः।''

**॥ ध्यान॥**

**''सुवर्णा भरणां देवि! पीतमाल्याम्बरावृताम्।**
**ब्रह्मास्त्रविद्यां बगलां वैरिणां स्तम्भिनीं भजे॥''**

यह मंत्र भक्तमंदार विद्या, मंत्र रत्न आदि नामों से जाना जाता है। अनेकानेक साधक ऐसे हैं, जिन्होंने इस मंत्र की साधना द्वारा लक्ष्मी स्वरूपा भगवती बगला की कृपा प्राप्त की है।

**जपमंत्र- ''श्री ह्लीं ऐं भगवति बगले मे श्रियं देहि देहि स्वाहा।''**

तथा

**''ॐ ह्लीं ऐं भगवती बगले मे श्रियं देहि देहि स्वाहा।''**

जिन लोगों को व्यापार पूरी तरह बंद होने के कगार पर हो, धन डूब गया हो, पुनः वापसी की कोई आशा अथवा संभावना न हो अथवा ऐश्वर्य प्राप्ति की सतत अभिलाषा हो, उनके लिए वास्तव में यह मंत्र वाच्छाकल्पद्रुम है। इस मंत्र के द्वारा पुटित शतचण्डी प्रयोग आश्चर्यजनक सफलता प्रदान करने वाले हैं। 'श्रीमद्भागवत' के आठवें स्कन्द के आठवें अध्याय के आठवें मंत्र- ''ततश्चाविर्भूत् साक्षाच्छ्री रमा भगवत् परा। रञ्जयन्ति दिशः कान्त्या

विद्युत् सौदामिनी यथा'' से संयोग करके प्रयोग करने से भी विशेष रूप से अर्थ की प्राप्ति होते देखा गया है। इस मंत्र का जप बिल्वमूल में बैठकर इस हजार की संख्या में लक्ष्मी स्वरूपा बगला का ध्यान करते हुए करने से साधक लक्ष्मीवान् हो जाता है। पुटित मंत्र यह बनता है- **'' ॐ श्रीं ह्रीं ऐं भगवति बगले ततश्चाविर्भूत साक्षाच्छ्री रमा भगवत्परा। रञ्जयन्ति दिशः कान्त्या विद्युत् सौदामिनी यथा मे श्रियं देहि-देहि स्वाहा।''**

**॥ त्रयविंशाक्षर मंत्र॥**

**जपमंत्र- '' ॐ ह्लीं क्लीं ऐं बगलामुख्यै गदाधारिण्यै प्रेतासनाध्यासिन्यै स्वाहा।''** (पश्चिमाम्नाय)

**॥ ध्यान॥**

**'' ॐ पीतशंख गदाहस्ते पीतचन्दन चर्चिते।**
**बगले मे वरं देहि शत्रु सङ्घ विदारिणी॥''**

इस मंत्र का विधान भी कुलाचार क्रम के अनुसार होता है। महानिशा के समय किसी नवयौवना शक्ति को निर्वस्त्र करके अथवसा अर्चन-तर्पण करके इस मंत्र का जप किया जाता है, जिससे मंत्र सिद्ध होकर साधक को उसका अभीष्ट प्रदान करता है।

इसी क्रम में त्रैलोक्य स्तम्भिनी माता बगलामुखी का एक अन्य पञ्चदशी मंत्र भी है, जिसका विधान ध्यान त्रयविंशाक्षरी मंत्र के ही समान है। वह मंत्र इस प्रकार है-

**''ह्लीं क्लीं ऐं बगलामुख्यै गदाधारिण्यै स्वाहा।''**

**॥ चतुस्त्रिंशदक्षर मंत्र-विधान॥**

**जपमंत्र- '' ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।''**

**॥ ध्यान॥**

**गम्भीरा च मदोन्मत्ता स्वर्णकान्ती समप्रभां,**
**चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासन संस्थिताम्।**
**मुद्गरं दक्षिणे पाशं जिह्वां च वज्रकं,**
**पीताम्बर धरां देवीं दृढ़पीन पयोधराम्॥**
**हेमकुण्डल-भूषां च पीत चन्द्रार्द्ध शेखरां,**
**पीतभूषणं-भूषां च रत्नसिंहासने स्थिताम्॥**

**विनियोग-** नारद ऋषि, त्रिष्टुप छन्द, बगलामुखी देवता, ह्लीं बीज, स्वाहा शक्ति। (हिंदी तंत्रसार व मूलमंत्रकोष)

**न्यास-** हृदय, शिर, शिखा, कवच, नेत्र व अस्त्र न्यास मूल मंत्र से करें।

यथा-

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। बगलामुखी शिरसे स्वाहा। सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। वाचं मुखं स्तम्भय कवचाय हुं। जिह्वां कीलय नेत्र त्रयाय वौषट। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट।

## ॥ षट् त्रिंशदक्षर मंत्र-विधान ॥

**जपमंत्र-** **''ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाच मुखं स्तंभय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।''** (मूलमंत्रकोष)

### ॥ ध्यान ॥

**मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डप रत्नवेद्यां सिंहासनो परिगतां परिपीत-वर्णाम्।**
**पीताम्बराभरण माल्यविभूषिताङ्गी देवीं स्मरामि धृतमुद्गर वैरिजिह्वाम॥**
**जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम्।**
**गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि॥**

इस मंत्र के ऋष्यादि व न्यासादि चौंतीस अक्षरी मंत्र के समान ही हैं।

उपर्युक्त 36 अक्षरी के अलावा सांख्यायन तंत्र में दूसरे मंत्र का उल्लेख है। इसमें रेफ हीन बीज को कीलित व स्तंभित कहा गया है तथा रेफयुक्त (ह्रीं) बीज मंत्र को श्रेष्ठ माना है। अधिकांश साधक इसी मंत्र का प्रयोग करते हैं।

**जपमंत्र-** **''ॐ ह्रीं बगला मुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं (ह्लीं) ॐ स्वाहा।''**

**विनियोग-** ॐ अस्य श्री बगलामुखी मंत्रस्य नारद ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्री बगलामुखी देवता, ह्लीं बीजं स्वाहा शक्तिः ॐ कीलकं मम-अभीष्ट सिद्धयर्थे च शत्रुणां स्तंभनार्थे जपे विनियोगः।

**ऋष्यादिन्यास-** नारद ऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्रीबगलामुखी देवतायै नमः हृदये। ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पाादयो। ॐ कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

**करन्यास-** ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्या नमः। बगलामुखि तर्जनीभ्यां नमः। सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः। वाचं मुखं पदं स्तंभय अनामिकाभ्यां नमः। जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

**षडङ्गन्यास-** ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। बगलामुखि शिरसे स्वाहा। सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। वाचं मुखं पदं स्तंभय कवचाय हुम्। जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

### ॥ ध्यान ॥

**मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डप रत्नवेद्यां सिंहासनो परिगतां परिपीत-वर्णाम्।**
**पीताम्बराभरण माल्यविभूषिताङ्गी देवीं स्मरामि धृतमुद्गर वैरिजिह्वाम॥**
**जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम्।**
**गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि॥**

यद्यपि अधिकांश साधक यही ध्यान करते हैं, जिसमें भगवती एक हाथ से शत्रु की जिह्वा पकड़े हुए हैं और दूसरे हाथ से उस पर गदा प्रहार को उद्यत हैं। परंतु इसके अतिरिक्त दूसरा ध्यान भी है, जो उत्तराम्नाय व उर्ध्वामनाय मंत्रों के लिए अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। यथा-

''सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीम्।
हेमाभाङ्गरूचिं शशाङ्क मुकुटां सच्चम्पक स्त्रग्युताम्।
हस्तैर्मुद्गर पाश वज्र रसनाः संबिभ्रती भूषणौ-
र्व्याप्ताङ्गी बगलामुखी त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्॥''

इसके अतिरिक्त सांख्यायन तंत्र में एक अलग ध्यान दिया गया है, जिसमें भगवती का चतुर्भुजी के रूप में ध्यान किया गया है-

''चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासन संस्थितां,
त्रिशूलं पान पात्रं च गदा जिह्वां च विभ्रतीम्।
बिम्बोष्ठी कंबुकण्ठीं च सम पीन पयोधरां,
पीताम्बरां मदाघूर्णां ध्यायेद् ब्रह्मास्त्र-देवताम्॥''

ऊपर मैंने इस मंत्रराज के तीन ध्यानों का उल्लेख किया है, जिनमें से साधक जो चाहें वह ध्यान कर सकते हैं। परंतु अनुभव से मैंने यह पाया है कि ''मध्ये सुधाब्धिमणि'' वाला ध्यान करना अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है, तथा उसके अनुसार मंत्रजप में भी अधिक ध्यान लगता है।

भगवती के मूल मंत्र (36 अक्षरी) को मंत्रराज की संज्ञा से विभूषित किया गया है। इस मंत्र राज की उपासना-जपना से त्रैलोक्य में कोई ऐसा कार्य नहीं है, जिसकी सिद्धि ना हो सकती हो। आवश्यकता केवल कामनानुसार सङ्कल्प लेने तथा उसके सही क्रियान्वयन की है। इसलिए मैं आवश्यक समझता हूँ कि इसका पूर्ण विधान यहा प्रस्तुत करूं।

# ॥ मंत्रराज की सिद्धि हेतु पूर्ण विधान ॥

**1 पञ्चक्रमासक्त-** भगवती बगला के उपासक के लिए सर्वप्रथम जो अत्यावश्यक कार्य है वह है उसका पंचक्रम विधान। अर्थात् वह (1) पीताशी (2) पीतपानी (3) पीतशय्यासमन्वित (4) पीताम्बर युक्त और (5) पीतपूजापरायण का पालन करने वाला हो, क्योंकि- **''सर्वपीतोचारेण मंत्रः सिद्ध्यति मंत्रिणः।''** उपासना समय में पञ्चाङ्ग - कवच, स्तोत्र, हृदय, नाम, स्तुति आदि का पाठ करें। फिर यंत्र पूजन कर मूल मंत्र का यथा संभव जप करें। साधना में सफलता के लिये यह अति आवश्यक है कि भगवती की पंचोपचार, दशोपचार, षोडशोपचार, षट्त्रिंशोपचार, चतुषष्टि-उपचार पूजन करके स्तोत्र, कवच, हृदय, पटल, स्तव, कीलक, गीता, उपनिषद् का पाठ किया जाये। ये ही भगवती की उपासना के स्वाध्यायात्मक अङ्ग हैं।

मंत्र-जप से पूर्व मंत्र-वर्णो का न्यास अपने अङ्ग-प्रत्यङ्ग में करना चाहिए, जिससे साधक स्वयं मंत्रवत् हो जाये। वास्तव में न्यास का उद्देश्य 'अहं' का भाव मिटाकर अपने अङ्गों में मंत्रवर्णो का आधिपत्य बना देना होता है। भगवती के मूल मंत्र के वर्णों का अपने अङ्ग-प्रत्यंग में न्यास करने के लिए यूं तो अलग-अलग मुद्राएं बनायी

जाती हैं, लेकिन केवल अपनी अनामिका अंगुली को अंगूठें से मिलाकर (तत्व-मुद्रा) कहे गए अंगों पर रखते हुए ही मंत्रवर्ण का उच्चारण करने से भी न्यास संपन्न हो जाता है।

**॥ मन्त्रवर्ण-न्यास ॥**

**मंत्र- '' ॐ ह्लीं बगलामुखिी! सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।''**

'ॐ' नमः शिरसि। 'ह्लीं' नमो ललाटे। 'बं' नमो भ्रूमध्ये। 'गं' नमो दक्षनेत्रे। 'लां' नमो वामनेत्रे। 'मुं' नमो दक्षकर्णे। 'खिं' नमो वामकर्णे। 'सं' नमो दक्षिणनासापुटे। 'र्वं' नमो वाम-नासापुटे। 'दुं' नमो दक्षगण्डे। 'ष्टां' नमो वामगण्डे। 'नां' नमो ऊर्ध्वोष्ठे। 'वां' नमो अधरोष्ठे। 'चं' नमो मुखे। 'मुं' नमो चिबुके। 'खं' नमो गले। 'पं' नमो दक्षबाहुमूले। 'दं' नमः कूर्परे। 'स्तं' नमो मणिबन्धे। 'भं' नमो अंगुलिमूले। 'यं' नमो अंगुल्यग्रे। 'जिं' नमो वामदोर्मूलू। 'ह्वां' नमः कूर्परे। 'कीं' नमो मणिबन्धे। लं नमः अंगुलिमूले। यं नमः अंगुल्यग्रे। 'बुं' नमो दक्षोरूमूले। 'द्धिं' नमो जानुनि। 'विं' नमो गुल्फे। 'नां' नमः अंगुलिमूले। 'शं' नमः अुगल्यग्रे। 'यं' नमो वामोरौ। 'ह्लीं' नमो वामजानुनि। 'ॐ' नमो गुल्फे। 'स्वां' नमः अंगुलि मूले। 'हां' नमः वाम-दक्षिण-पादांगुल्यग्रे।

मंत्र जप से पूर्व प्रतिदिन न्यास करें। शापाद्धार आदि क्रियाएं पुरूश्चरण के प्रथम दिन ही संपन्न कर लें। एक लाख जप करने से साधक का मंत्र सिद्ध हो जाता है। उसके बाद कुल जप का दशांश हवन, तद्दाश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन अथवा अभिषेक और अभिषेक की दशांश-संख्या में योग्य ब्राह्मणों, गुरु आदि को भोजन, वस्त्रादि तथा दक्षिणा से संतुष्ट कर उनका आर्शीवाद का दशांश जप कर लेने से भी पूर्णता मिल जाती है। यदि एक लाख की संख्या में जप किया है तो हवन उसका दश हजार की संख्या में होगा। लेकिन कलियुग में चार गुने का विधान है। इसलिए दश हजार के स्थान पर चालीस हजार की संख्या में जप करना चाहिए।

यदि ब्राह्मणों को भोजन कराने में सक्षम न हों तो केवल गुरुदेव को ही भोजन कराकर उनसे आर्शीवाद प्राप्त करें। इससे भी अनुष्ठान पूर्ण माना जाता है।

जहां तक हवन का प्रश्न है तो इस संबंध में यह ज्यादा उचित है कि यदि दशांश होम न कर सकें तो दशांश अथवा उसका चार गुना जप करके छोटा सा होम कर देना चाहिए। क्योंकि आहुतियां 'वीर्यरूप' कहलाती हैं। जिस प्रकार संतान-प्राप्ति में 'वीर्य' का स्थान है, उसी प्रकार सिद्धि-प्राप्ति में होम का स्थान है।

पुरचरण के उपरांत गुरु, ब्राह्मण, बड़े-बुजुर्गो का आर्शीवाद बहुत आवश्यक है, जो साधक को उसके लक्ष्य तक पहुंचाने में पुल का कार्य करता है।

**॥ पुरश्चरण ( जप ) के फल ॥**

'मेरू-तंत्र' के अनुसार पूजन-यजन का विधान इस प्रकार है-

**1 विनियोग व न्यास**- सर्व प्रथम विनियोग करके मंत्र के न्यास आदि करें।

**2 ध्यान**- न्यास आदि के बाद भगवती का ध्यान करें।

**3 यंत्र-पूजन**- ध्यान के बाद सोने, चांदी अथवा भोजपत्र पर कपूर, अगरू, कस्तूरी, चंदन तथा रोती मिलाकर उसकी स्याही से अनार की कलम के द्वारा यंत्रराज का निर्माण कर उसका पूजन करें।

**4 जप**- यंत्र पूजन के उपरांत आरती आदि संपन्न करके यथा संख्यक जप करें।

**5 होम**- नियत संख्या में जप करने के उपरांत एक सुंदर कुण्ड का निर्माण करें। उसे तीन मेखलाओं से सजाकर,

## ॥ बगला-गायत्री-विधान॥

प्रत्येक देवता की अपनी गायत्री होती है, जिसका जप किए बिना मंत्र में सिद्धि प्राप्त नहीं होती और न ही देवता की कृपा प्राप्त होती है। बगला गायत्री का स्वरूप निम्नवत् है-

**बगला-गायत्री- "ॐ ब्रह्मास्त्राय विद्महे स्तम्भनबाणाय धीमहि तन्नः बगलाप्रचोदयात्।"** (साख्यायन तंत्र)

भगवती बगला का यह गायत्री मंत्र विविध-फल-प्रदायक है। "वाञ्छाकल्पद्रुम" के समान यह ब्रह्मास्त्र-गायत्री साधक के सभी अभीष्टों को सिद्ध करने वाला है।

**मन्त्रोद्धार-**

**"ब्रह्मास्त्राय पदं चोक्ता विद्महेति पदं तथा।**
**स्तम्भनेति पदं चोक्ता बाणाय तदनन्तरम्॥**
**धीमहिति पदं चोक्ता तन्नः शब्दं ततो वदेत्।**
**बगलापदमुच्चार्यमुद्धरेच्च प्रचोदयात्॥**
**गायत्री बगला नाम्नी सर्वसिद्धिप्रदा भुवि।"**

इस मंत्र का परिचय इस प्रकार है-

| | ऋषि | छन्द | देवता | बीज | शक्ति | कीलक |
|---|---|---|---|---|---|---|
| **बगला गायत्री** → | ब्रह्मा | गायत्री | बगला | ॐ | ह्लीं | विद्महे |

## पुरश्चरण विधान

| पुरश्चरण | हवन | तर्पण | अभिषेक | ब्राह्मण भोज |
|---|---|---|---|---|
| 4लाख | 40 हजार | 4 हजार | 400 | 40 |

### हवनीय द्रव्य एवं सामग्री

| | |
|---|---|
| घी | कामनानुसार |

न्यास एवं ध्यान- बगला गायत्री के ध्यान एवं न्यासादि 36 अक्षरी मंत्र के अनुसार ही करें, यथा-''**न्यास-ध्यानादिकं सर्वं कुर्यात्तन्मन्त्रराजवत्।**''

**॥ प्रयोग ॥**

मोक्षार्थ-'ॐ' सहित जप करें।

कामार्थ-'ॐ ग्लौं' सहित जप करें।

उच्चाटनार्थ-'ग्लौं' सहित जप करें।

सम्मोहनार्थ-'क्लीं' सहित जप करें।

स्तम्भनार्थ-'ह्लीं' सहित जप करें।

विद्वेषणार्थ-'धूं-धूं' सहित जप करें।

मारणार्थ-'हूं ग्लौ ह्रीं' सहित जप करें।

विद्यार्थ-'ऐं' सहित जप करें।

सुयोग्य कन्यार्थ-'ऐं क्लीं सौः' सहित जप करें।

धनार्थ-'श्री' सहित जप करें।

विष-नाशार्थ-'क्षी' सहित जप करें।

प्रेतबाधा नाशार्थ-'हं' सहित जप करें।

रोग नाशार्थ-'ॐ जूं सः' सहित जप करें।

उपरोक्त सभी बीजों को मंत्र के आदि (आरंभ) में लगाकर जप कर से निर्दिष्ट फल की प्राप्ति होती है।

**बीज सम्पुटीकरण विधान-** भूमि-प्राप्ति के लिए''स्तंभन बाणाय'' के बाद''ग्लौं'' बीज लगाकर जप करें शत्रु को ताप व मृत्यु प्रदान करने के लिए मंत्र के आरंभ में 'रं' लगाकर जप करें।

राज-वशीकरण के लिए मंत्र के आदि में 'ह्रीं' लगाकर जप करना चाहिए।

उपर्युक्त प्रयोगों को निम्नवत् कहा गया है-

मोक्षार्थी-तारादि (आदि में प्रणव) प्रजपेन्मंत्रं मोक्षार्थी च कुमारक।

कामार्थी-कामार्थी प्रजपेत्पुत्र तारावाराहपूर्वकम्।

सम्मोहनार्थी-सम्मोहनर्थं प्रजपेत्कामराजपुरस्सरम्।

स्तम्भनार्थी-स्तम्भनार्थी जपेत् पुत्र बगलाबीजपूर्वकम्।

विद्वेषणार्थी-विद्वेषणादौ प्रजपेद्धूङ्कारद्वयपूर्वकम्।

उच्चाटनार्थी-उच्चाटनार्थं प्रजपेच्छक्तिवाराहपूर्वकम्।

मारणार्थी-वाराहशक्ति वाराहं तच्च माया पुरस्सरम्।

प्रजपेन्मंत्रमेतद्धि मारणं भवति ध्रुवम्।

इन सभी मंत्रों का जप कामनानुसार चयन करके करना चाहिए। जप संख्या कम से कम एक लाख होनी आवश्यक है।

स्मरण रखें! कलिकाल में गायत्री-जप के बिना कोई भी मंत्र सिद्ध हो ही नहीं सकता, यथा- **''गायत्री च बिना मंत्रों न सिद्धयति कलौ युगे।''** यदि करोड़ों मंत्रों का जप कर लिया और गायत्री-जप (बगला-गायत्री) नहीं किया, तो साधक को कोई भी मंत्र सिद्ध नहीं हो सकता।

## Baglamukhi Sadhana Rahasya (Brahmastra Sadhana )

Please secure your copy of Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya (Brahmastra Sadhana), the upcoming book of Shri Yogeshwaranand Ji by paying Rs 680 (Including postal charges) into the below account.

Sumit Girdharwal
Axis Bank
912020029471298 (Current Account)
Ifsc Code UTIB0001094

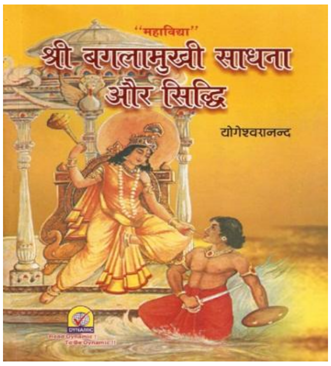
After payment send an email with you complete address including the payment receipt to shaktisadhna@yahoo.com and info@yogeshwaranand.org



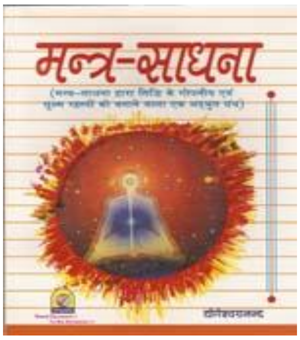

**Shri Yogeshwaranand Ji**
**+919917325788, +919675778193**
**shaktisadhna@yahoo.com**
**www.anusthanokarehasya.com**
**www.baglamukhi.info**


My dear readers! Very soon I am going to start an E-mail based monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare. I request you to appreciate me, so that I can change my dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints and through the grace of Ma Pitambara. Please make registered to yourself and your friends. For registration email me at shaktisadhna@yahoo.com. Thanks

1. **Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhana Aur Siddhi**




2. **Mantra Sadhana**




3. **Shodashi Mahavidya** (Tripursundari Sadhana)




**4. Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya (Brahmastra Sadhana) - Under Process**

## Editorial

Being the editor and publisher of all the articles written by Shri Yogeshwaranand Ji  I am very pleased to say that we are taking a next step ahead in the field of spirituality by digitalizing all the available Sanskrit texts in the world related to secret mantras, tantras and yantras. In the first phase we will digitalize all the content provided by shri yogeshwaranand ji regarding das mahavidyas. We will not only make it available for Hindi and Sanskrit readers but also translate it into English so that whole world can get the benefits from our work. I can't do it alone. To do the same I request all of you to help me achieve this goal.

Requirements to accomplish this goal

1. We need a person who can write articles in Hindi and Sanskrit in software like Adobe Indesign (Preferable font chanakya)
2. We need a graphic designer who can create good pictures to summarize the content.
3. We need an English translator who can translate these articles into English
4. Money which highly needed to get this work done.

I am waiting for your feedback and support.

Sumit Girdharwal
+91-9540674788,
+91-9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com
sumitgwal@gmail.com

Jai Ma Pitambara